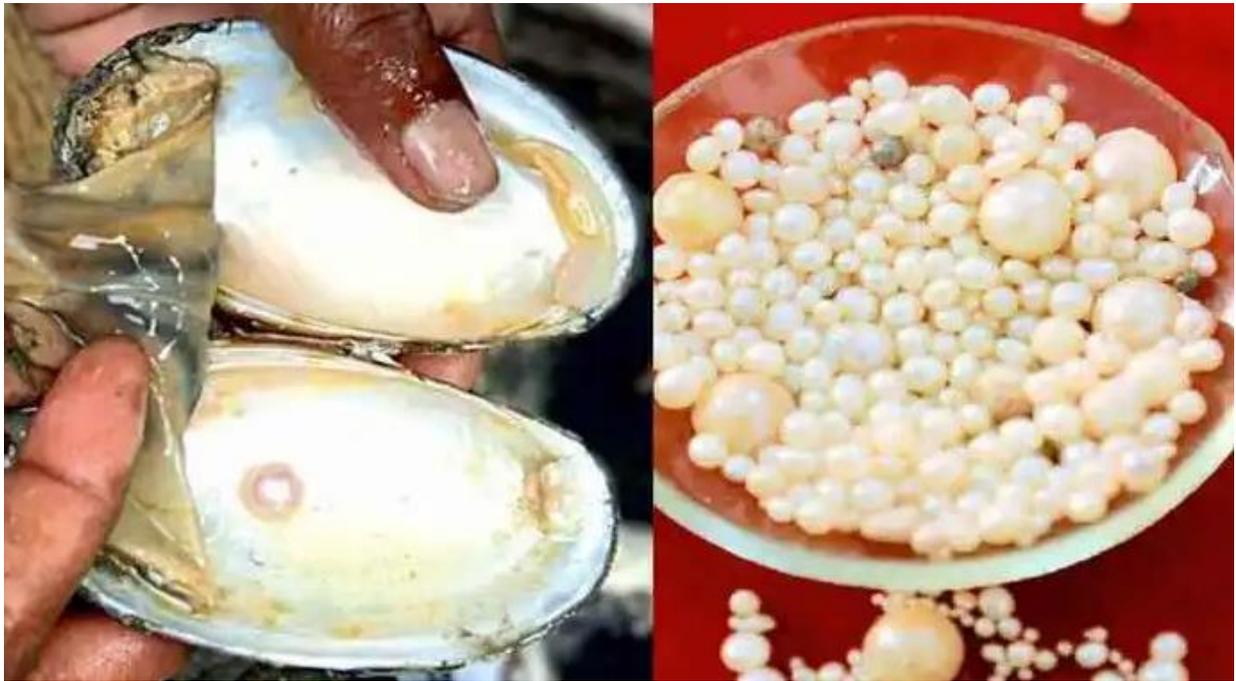


मोती की खेती

| | |
|---|------------------------------|
| ➤ | मोती की खेती क्या है ? |
| ➤ | कैसे बनता है कुदरती मोती? |
| ➤ | कैसे शुरू करें मोती की खेती? |
| ➤ | मोती की खेती के प्रकार ? |



● मोती की खेती क्या है ?

मोती की खेती अगर रफ़्तार पकड़ ले, तो ये किसानों को लाखों का मुनाफ़ा दे सकती है। बस रखरखाव में कई बातों का ध्यान रखना ज़रूरी होता है। इसमें कम लागत में किसानों को तगड़ा मुनाफ़ा हो सकता है, अगर वो सही तरीके से ट्रेनिंग के बाद ये काम शुरू करें तो। । यह प्रक्रिया पुरानी सभ्यताओं से चली आ रही है और इसमें एक विशेष प्रकार के सीप या मोलस्क का उपयोग होता है। मोती की खेती की यह विधि समुद्री और ताजे पानी के माहौल में की जाती है और इसका मुख्य उद्देश्य उच्च गुणवत्ता वाले मोती उत्पन्न करना होता है।

मोती की खेती की प्रक्रिया को समझने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि मोती कैसे बनता है। मोती तब उत्पन्न होता है जब सीप के शरीर में कोई विदेशी पदार्थ, जैसे कि एक छोटा सा कण या परजीवी, प्रवेश करता है। सीप की सुरक्षा तंत्र इसे बाहर निकालने के बजाय इसे एक विशेष पदार्थ से ढक देता है, जिसे 'नैकर' कहा जाता है। यह नैकर धीरे-धीरे कई परतों में बन जाता है और मोती का निर्माण होता है। मोती की खेती में इस प्राकृतिक प्रक्रिया को नियंत्रित और प्रोत्साहित करने के लिए कृत्रिम रूप से सीप के शरीर में एक छोटे से कण को डाला जाता है, ताकि वह एक मोती का निर्माण कर सके।

मोती की खेती की प्रक्रिया को दो प्रमुख श्रेणियों में बांटा जा सकता है - समुद्री मोती और मीठे पानी के मोती। समुद्री मोती की खेती समुद्र के खुले पानी में की जाती है और इसके लिए विशेष प्रकार के सीप, जैसे कि पिन्क मोथ्स, का उपयोग किया जाता है। समुद्री मोती के लिए सीप को समुद्र में एक विशेष जाल में रखकर प्रशिक्षित किया जाता है और यह प्रक्रिया कई वर्षों तक चलती है। समुद्री मोती की गुणवत्ता और चमक भी इसकी खेती की स्थिति पर निर्भर करती है, जिसमें पानी की गुणवत्ता, तापमान और अन्य पर्यावरणीय कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वहीं, मीठे पानी के मोती की खेती तालाबों और झीलों में की जाती है। इसमें 'हीलिया मोथ्स' का उपयोग किया जाता है। मीठे पानी के मोती आमतौर पर समुद्री मोती की तुलना में सस्ते और छोटे होते हैं, लेकिन इनकी खेती अधिक नियंत्रित और संगीनी होती है। मीठे पानी के मोती की खेती की प्रक्रिया में सीप को पानी में डालकर विशेष ध्यान और देखभाल की जाती है। इसमें भी सीप के शरीर में कृत्रिम कण डालकर मोती का निर्माण किया जाता है, और यह प्रक्रिया लगभग 1 से 2 साल की होती है।



मोती की खेती में सफलता पाने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तकनीकी कौशल की आवश्यकता होती है। सीप की प्रजातियों का चयन, उनकी देखभाल, पानी की गुणवत्ता, और अन्य पर्यावरणीय परिस्थितियों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

इसके अलावा, खेती के दौरान बीमारियों और परजीवियों से बचाव के लिए निरंतर निगरानी और प्रबंधन की आवश्यकता होती है।

आधुनिक तकनीकों और शोध ने मोती की खेती को अधिक प्रभावी और लाभकारी बना दिया है, जिससे आज यह एक प्रमुख और लाभकारी व्यवसाय बन गया है।

मोटे तौर पर मोती की खेती एक अत्यंत मेहनती और ध्यान देने वाली प्रक्रिया है, जो प्राकृतिक सुंदरता और मूल्य के कारण लोगों को आकर्षित करती है। यह न केवल आर्थिक लाभ प्रदान करती है बल्कि एक सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व भी रखती है। मोती की खेती की प्रक्रिया में निरंतर अनुसंधान और विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखना भी महत्वपूर्ण है, ताकि यह उद्योग स्थायी और लाभकारी बना रहे।

● कैसे बनता है कुदरती मोती?

मोती समुद्र के अंदर रहने वाले एक जीव जिसे घोंघा (Oyster) कहते हैं द्वारा बनाया जा ता है। ये एक सख्त खोल के अंदर रहता है जिसे सीप कहते हैं। इसी सीप के अंदर मोती बनता है।



दरअसल, सीप में जब कोई रेत कण प्रवेश करता है, तो घोंघा इस कण पर सीप के पदार्थ की परत पर परत चढ़ाने लगता है और यह

परत कैल्शियम कार्बोनेट की होती है। कुछ समय बाद सीप के अंदर मोती बन जाता है। ये तो मोती बनने की प्राकृतिक प्रक्रिया है, लेकिन इसकी खेती में कृत्रिम तरीके से सीप के अंदर कुछ पदार्थ डालकर मोती का निर्माण किया जाता है।

- **कैसे शुरू करें मोती की खेती?**

मोती समुद्र के अंदर रहने वाले एक जीव जिसे घोंघा (Oyster) कहते हैं द्वारा बनाया जा ता है। ये एक सख्त खोल के अंदर रहता है जिसे सीप कहते हैं। इसी सीप के अंदर मोती बनता है।



मोती की खेती, जिसे (Pearl Farming) भी कहते हैं, एक जटिल और तकनीकी प्रक्रिया है। यहां कुछ प्रमुख कदम दिए गए हैं जो आपको मोती की खेती शुरू करने में मदद कर सकते हैं:

- स्थल का चयन: मोती की खेती के लिए समुद्री पानी या मीठे पानी की आवश्यकता होती है। समुद्री मोती के लिए समुद्र तट के पास और मीठे पानी के मोती के लिए तालाब या झीलें उपयुक्त होती हैं। पानी की गुणवत्ता, तापमान और नमक का स्तर महत्वपूर्ण हैं।
- सीपियों की चयन: मोती की खेती के लिए विशेष प्रकार की सीपियों की आवश्यकता होती है, जैसे कि 'Pinctada' प्रजाति की सीपियाँ समुद्री मोती के लिए और 'Hyriopsis cumingii' या 'Cristaria plicata' मीठे पानी के मोती के लिए।



- नुकसान की सुरक्षा: सीपियों को संभावित रोगों, कीटों और अन्य प्राकृतिक खतरों से बचाने के लिए उचित सुरक्षा उपायों को अपनाना जरूरी है।



- सीपी में एक कण डालना: मोती के विकास के लिए, सीपी के अंदर एक छोटे से कण को एक सर्जिकल प्रक्रिया के माध्यम से डाला जाता है। यह कण एक प्राकृतिक वस्तु हो सकता है या कृत्रिम रूप से निर्मित हो सकता है।
- सीपी की देखभाल: सीपी को पानी के उपयुक्त तापमान, pH स्तर और अन्य रसायनिक गुणों के साथ नियमित रूप से निगरानी करनी चाहिए। उन्हें नियमित रूप से साफ किया जाना चाहिए और संक्रमण से बचाया जाना चाहिए।

- संग्रहण और प्रसंस्करण: जब सीपी में मोती पूरी तरह से विकसित हो जाता है, तो उसे सावधानीपूर्वक निकालना होता है। मोती को फिर साफ किया जाता है और उसके बाद विभिन्न गुणवत्ता मानकों के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।
- बाजार और विपणन: मोती को विपणन करने के लिए एक व्यापार योजना बनानी होती है। आपको इसे विभिन्न बाजारों और ग्राहकों के लिए उपलब्ध कराना होगा।

● मोती की खेती के प्रकार ?

❖ समुद्री मोती की खेती (Marine Pearl Farming)

समुद्री मोती की खेती, जिसे "मरीन पर्ल फार्मिंग" भी कहा जाता है, एक नियंत्रित प्रक्रिया है जिसमें मोती की खेती के लिए समुद्री कछुओं और सीपियों का उपयोग किया जाता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई चरण शामिल होते हैं:

1. सेलेक्शन और तैयारी :

- सीपी का चयन : मोती के उत्पादन के लिए उचित सीपियों का चयन किया जाता है। इन सीपियों को समुद्री पर्यावरण में अच्छी तरह से पलने और मोती बनाने की क्षमता होनी चाहिए।
- फार्म सेटअप: फार्म के लिए समुद्र की उपयुक्त गहराई और स्थान चुना जाता है। यह स्थान सीपियों के स्वास्थ्य और विकास के लिए अनुकूल होना चाहिए।

2. सीपियों का पालन:

- नर्सरी चरण : छोटे सीपियों को नर्सरी में रखा जाता है, जहाँ वे पहले कुछ महीनों तक सुरक्षित और स्वस्थ रहते हैं।
- विकास: जब सीपियाँ स्वस्थ होती हैं, तो उन्हें समुद्र में विशेष बक्सों या रैक पर रखा जाता है ताकि वे प्राकृतिक वातावरण में आराम से विकसित हो सकें।

3. कंट्रोलिंग :

- पर्यावरणीय निगरानी : पानी की गुणवत्ता, तापमान, और अन्य पर्यावरणीय कारकों की नियमित निगरानी की जाती है।

- रोग प्रबंधन: सीपियों के स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित रूप से रोग प्रबंधन और निरीक्षण किया जाता है।

4. इम्प्लांटेशन (Grafting):

- गैफ्टिंग: इस चरण में, सीपी के अंदर एक छोटा सा कण या "न्यूक्लियस" इम्प्लांट किया जाता है। यह कण मोती का केंद्र बनता है और इसके चारों ओर अल्ब्यूमिन की परतें बनती हैं।

5. विकास और कटाई :

- विकास : मोती के निर्माण के लिए आवश्यक समय (लगभग 6 महीने से 2 साल) तक सीपियों को पानी में छोड़ दिया जाता है।
- कटाई : जब मोती पूरी तरह से विकसित हो जाता है, तो सीपियों को खोला जाता है और मोती को निकाल लिया जाता है।

6. प्रसंस्करण :

- सफाई और ग्रेडिंग : प्राप्त मोती को साफ किया जाता है और गुणवत्ता के आधार पर ग्रेड किया जाता है।

- सजावट : मोती को ज्वेलरी और अन्य सजावटी वस्तुओं में उपयोग के लिए तैयार किया जाता है।

समुद्री मोती की खेती एक संवेदनशील और तकनीकी प्रक्रिया होती है, जो पर्यावरणीय कारकों और सीपी की देखभाल पर निर्भर करती है। यह प्रक्रिया मोती की गुणवत्ता और आकार को प्रभावित करती है।

❖ मीठे पानी की मोती की खेती (Freshwater Pearl Farming)

मीठे पानी की मोती की खेती एक महत्वपूर्ण और लाभकारी गतिविधि है जो मुख्य रूप से नदियों, तालाबों और अन्य मीठे पानी के स्रोतों में की जाती है। यहां इसके मुख्य चरण दिए गए हैं:

1. स्थान चयन और तैयारी:

- स्थान: एक उचित स्थान का चयन करें जहां पानी साफ और प्रदूषण-मुक्त हो। तालाब, झील या नदी के किनारे अच्छे स्थान हो सकते हैं।
- पानी की गुणवत्ता : पानी का pH स्तर, तापमान, और ऑक्सीजन स्तर आदर्श होना चाहिए। पानी को नियमित रूप से साफ और सहेजना आवश्यक है।

2. सीप की चयन :

- प्रजाति : मीठे पानी की मोती के लिए आमतौर पर *Pinctada* और *Hyriopsis* प्रजातियों की सीपियों का उपयोग होता है।
- स्वास्थ्य : स्वस्थ और मजबूत सीपियों का चयन करें, जो मोती निर्माण के लिए उपयुक्त हों।

3. प्रवेश प्रक्रिया:

- ग्राफ्टिंग: मोती का निर्माण तब शुरू होता है जब सीपी के अंदर एक छोटा ग्राफ्ट (एक नायब पदार्थ जैसे कि एक टुकड़ा सीपी की मांसपेशी से) डाला जाता है। यह ग्राफ्ट विदेशी वस्तु के रूप में कार्य करता है।
- लागत और पद्धतियाँ : यह प्रक्रिया पारंपरिक या आधुनिक तकनीकों से की जा सकती है।

4. देखभाल और निगरानी :

- पानी की गुणवत्ता : नियमित रूप से पानी की गुणवत्ता की जांच करें और सुनिश्चित करें कि उसमें कोई प्रदूषक तत्व न हो।
- खिला: सीपी को पर्याप्त मात्रा में भोजन और पोषक तत्व मिलना चाहिए।

5. संग्रहण और मूल्यांकन :

- समय : मोती की पूर्ण परिपक्वता में 1 से 3 साल लग सकते हैं।
- संग्रहण: मोती की परिपक्वता के बाद, सीपी को खोला जाता है और मोती को निकाला जाता है।
- गुणवत्ता : मोती की गुणवत्ता का मूल्यांकन आकार, रंग, और चमक के आधार पर किया जाता है।



6. प्रोसेसिंग और विपणन:

- प्रोसेसिंग: मोती को साफ करने, कतरने, और सजाने की प्रक्रिया की जाती है।
- विपणन: तैयार मोती को विभिन्न बाजारों में बेचा जा सकता है, जैसे गहनों की दुकानें और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म।